श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

श्री शत्रुंजय-मुक्ति सा विद्या या विमुक्तये सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

सम्यग्ज्ञान प्रवेशिका

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

नवम्बर — 2021

ऐनरोलमेन्ट नंबर

६

शहर ______

विद्यार्थी का नाम ______

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	गुलामी
(२)	चर्म
(३)	कुशल
(४)	विशाखा
(५)	गर्भज
(६)	संत
(७)	शासन (जैन)
(८)	गायब
(९)	प्रज्ञा
(१०)	याचना
(११)	आश्रव
(१२)	सद्गुण
(१३)	कमठ
(१४)	साधुओं
(१५)	तकदीर
(१६)	उपदेश
(१७)	केवलु
(१८)	धर्मानुष्ठान
(१९)	नवकारसी
(२०)	विवाह

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	नवकारसी
(२)	ध्येय (स्तुति)
(३)	तृण (घास)
(४)	स्थूलिभद्र
(५)	अभयकुमार
(६)	भाषा
(७)	प्रभु दर्शन
(८)	शिखरी
(९)	शठ
(१०)	स्थलचर
(११)	कंस
(१२)	ज्येष्ठजनों
(१३)	भद्रबाहु स्वामी
(१४)	सुजातक हाथी
(१५)	नेमिकुमार

(५)	पर / दूसरों को
(६)	यति
(७)	सम्मान से
(८)	उन्हें
(९)	लेखन
(१०)	चरणों की
(११)	वचन गुप्ति
(१२)	मरुदेवी
(१३)	ऐरावत क्षेत्र
(१४)	बुद्धि से
(१५)	प्रज्ञा
(१६)	नाश करनेवाले
(१७)	वध
(१८)	विघ्न बिना
(१९)	स्त्री
(२०)	अंतर्द्वीप

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	पूजा
(२)	कछुआ
(३)	अपयश
(४)	रहो

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	७	(६)	८
(२)	९	(७)	५
(३)	६	(८)	१
(४)	२	(९)	३
(५)	१०	(१०)	४

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	६
(२)	७
(३)	१३
(४)	९००
(५)	३०
(६)	५४
(७)	१२
(८)	१००
(९)	५००
(१०)	५

	प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	×	(१)	१३
(२)	×	(२)	५
(३)	✓	(३)	२१
(४)	✓	(४)	११
(५)	×	(५)	२०
(६)	×	(६)	१०
(७)	×	(७)	२६
(८)	✓	(८)	१५
(९)	✓	(९)	२२
(१०)	×	(१०)	१८

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ______ जांचनेवाले की सही ______

प्रश्न - ८

१. स्थान के क्षेत्र की अपेक्षा से मनुष्यो के 3 स्थान है। १) कर्मभूमि २) अकर्मभूमि ३) अंतरद्विप. जहाँ असि यानी तलवार, मसि यानी लेखन, कृषि यानी खेती जैसे व्यवहार हो वह कर्मभूमि. और जहाँ यह 3 व्यवहार नही हो वह अकर्मभूमि यह 30 है. जंबुद्विप के भरतक्षेत्र, हिमवंत, ऐरावत, हिरण्यवंत क्षेत्र जैसे आठ भूमियाँ है। प्रत्येक भूमी पर 7-7 द्विप है जिसे अंतरद्विप कहते है। वह 56 है। इस तरह कर्मभूमि 15, अकर्मभूमि 30 और अंतरद्विप-56 कुल 101 मनुष्य देह स्थानभेद से होते है।

२. नेमिनाथ प्रभु पहले भव मे धन नामक राजा थे और राजिमती धनवती पत्नी थी। दुसरे भव मे दोनो पहले देवलोक में देव और देवी थे. तिसरे भव मे प्रभु धनगती राजा और राजीमती रत्नावती राणी थी। चौथे भव मे वो दोनो चौथे देवलोक के देव बने। पाँचवे मे अपराजित राजा और प्रियतमा राणी बने। छठ्ठे भव मे दोनो ग्यारहवे देवलोक मे देव बने। सातवे भव मे शंख राजा और यशोमति रानी बने। आठवे भव मे दोनो अपराजित विमान मे देव हुये और नौवे भव मे प्रभु नेमिनाथ और राजीमती रानी बने.

३. सुलस के पिता कालसौरिक पूर्वभव के पापकर्म की वजह से वेदना पीडीत थे यह उनकी अवस्था देख सुलस ने सोचा की यह तो प्रत्यक्ष इस भव में दिखाई देने वाले फल है। परलोक में दुर्गति निश्चित है। यहाँ से ज्यादा परलोक में दुःख भोगने पडेंगे भाव बुरे होंगे तो भव बुरा और भव बुरा तो भाव बुरे यह चक्र चालू रहेगा मुझे दुर्गती में नही जाना और कोई भी पापकर्म मुझे नही करना। सुख देनेसे सुख मिलता है सुलस ने पाप के फल देखकर, भयभीत होकर पापभीरु बनकर धर्म का पालन किया।

४. उवसग्गहरं स्तोत्र मे श्रीपार्श्वनाथ नाम से युक्त विषधर फुलिंग नाम के मंत्र को जो कंठ में धारण करता है, उसके दुष्ट ग्रह, विविध रोग, मस्की विषम ज्वर नाश होते है। सिर्फ प्रभु को किया हुआ प्रणाम भी बहोत फल देने वाला होता है। मनुष्य और तिर्यंच गति में रहे जीव प्रभु का सिर्फ चिंतन करेंगे तो भी उनके दुःख दूर हो जाते है। चिंतामणी रत्न और कल्पवृक्ष से अधिक शक्तिवाला प्रभु का सम्यकत्व दर्शन पाकर जीव मोक्षस्थान प्राप्त करते है।

५. जीवन कष्टोंसे भरा हुआ होता है। जैसे शारिरीक कष्ट, मानसिक कष्ट नैसर्गिक कष्ट, व्यवहारिक कष्ट इस समस्त प्रकार के कष्ट यानी परि और षह यानी उन्ही कष्टोंको सहन कर समता भाव रखके धर्म मार्ग पर चलना उसमगना नही इसे परिषह कहते है यह 22 प्रकार के होते है। उसमे से शीतपरिषह यानी असहाय कडकडती ठंडी मे शरीर अकडा जाय तो भी साधु को न चलनेवाले पंखे या अग्नि का उपयोग नही करना है। और उष्ण परीषह यानी बहोत ज्यादा गर्मी